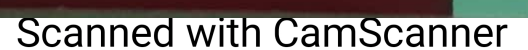


वर्ष : 2017-18

ईसुरी

बुन्देली लोक संस्कार गीतों पर एकाग्र



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-21

बुन्देली लोक संस्कार गीतों पर एकाग्र

वर्ष - 2018 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक-सचिव, बुन्देली पीठ

राजेन्द्र यादव

सहायक संपादक

विवेकानंद उपाध्याय

मनीष कुमार

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र

उप संपादक

हिमांशु कुमार

अवधेश कुमार



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...

- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 3

संपादकीय

- डॉ. राजेन्द्र यादव 5

वाचारम्भ

1. बुन्देली लोक संस्कार गीत - डॉ. राजेन्द्र यादव ✓ 9

2. बुन्देली लोक गीतों में शृंगार एवं उपालम्भ - डॉ. आशुतोष 17

- डॉ. राजेन्द्र यादव ✓

संस्कारों की कोठार से

1. बुन्देली संस्कार गीत - संकलन : बुन्देली पीठ 23

रचना समय

1. बेटी के विदा पर माँ की सीख - डॉ. गजाधर सागर 41

2. बिरहन की होरी (गीत) - डॉ. गजाधर सागर 42

कसौटी

1. बुन्देली लोक संस्कार गीतों की समग्रता - हरगोविंद 'विश्व' 47

2. बुन्देली गीतों में जन्म एवं विवाह संस्कार - हरिविष्णु अवस्थी 62

3. बुन्देलखण्ड की वैवाहिक रीतियाँ - महेश कुमार मिश्र 'मधुकर' 73

4. बुन्देली जन्म-संस्कार गीतों में लोकजीवन - यशवंत सिंह 79

5. संस्कार गीतों में बुन्देली संस्कृति - मधुसूदन सिलाकारी 85

6. बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत - डॉ. ओमप्रकाश चौबे 88

बुन्देली लोक संस्कार गीत

डॉ. राजेन्द्र यादव*

मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के 20 जिलों में विभाजित बुन्देली समाज के जीवन में सदियों से ध्वनित होते आ रहे, बुन्देली संस्कृति के जीवन गीत इस विशिष्ट संस्कृति की पहचान कराते हैं। बुन्देली लोक जीवन उसके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देता है। आज संचार क्रांति द्वारा प्रसारित नगरीय यांत्रिक सभ्यता के दौर में भी बुन्देलखण्ड के नगरीय कस्बाई और ग्रामीण जन समाज के जीवन से बुन्देली लोक संस्कार गीतों का गहरा रिश्ता जीवंत दिखाई देता है। आधुनिक जीवन पद्धति में ढलते बुन्देली लोक संस्कार गीत सुनाई देते हैं। शिक्षा परिवहन और संचार साधनों के प्रभाव से बुन्देली लोक समाज भी आधुनिक हुआ है, लेकिन बुन्देलखण्ड के लोक जीवन ने आज भी अपनी बुन्देली लोक संस्कृति को मजबूती से संभाला हुआ है। आज इक्कीसवीं सदी में सिनेमा, टेलीविजन, इंटरनेट के जीवन से बुन्देलखण्ड भी अछूता नहीं है, तमाम आधुनिकता के दबाव के बावजूद बुन्देली समाज ने अपने जीवन के विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीत नहीं छोड़े हैं। आज जब पूरी दुनियाँ को एक 'ग्लोबल' यांत्रिक सभ्यता में मजबूरन ढलना पड़ रहा है, क्षेत्रीय संस्कृतियों की विशिष्टता धीरे-धीरे हासिये पर पहुँचती जा रही है, वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, घर और घर के भीतर का सामान सहित भाषा बोली की अपनी सांस्कृतिक

पहचान भी सामाप्त होती जा रही हैं और क्षेत्रीय संस्कृतियों की निजता को ग्लोबल अमानवीय यांत्रिकता की संस्कृति निगले जा रही है। इस विषम परिस्थिति में बुन्देली लोक संस्कृति ने अपनी आत्मा के रूप में बुन्देली लोक संस्कार गीतों को अपने जीवन में अभी भी सहेजकर रखा है। बुन्देली लोक जीवन में जन्म से लेकर विवाह नव बन्धु आगमन और संतानोत्पत्ति सहित विभिन्न तीज-त्यौहारों विशेषकर होली, दिवाली, नवरात्रि सहित कृषि कार्य के विशेष अवसरों फसल कटाई, बोवाई, खलिहान के कार्य करते हुए जीवन के अंत मृत्यु के बाद अंतिम विदाई गीत भी अस्थि विसर्जन के समय विशेष लोक संस्कार गीत गाये जाते हैं। बुन्देली लोक मानस के जीवन में प्रत्येक विशेष अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में जीवन की स्मृतियाँ, आकांक्षाएँ, जीवनानुभव, जीवन दर्शन, क्षेत्रीय सामाजिक, सांस्कृतिक गरिमा, इतिहास, वीरता, रक्षा, दान आदि मानवीय जीवन के विविध पक्षों को सम्मिलित किया जाता है।

बुन्देली लोक संस्कार गीत बुन्देलखण्ड अंचल की समृद्ध प्राचीन विशिष्ट संस्कृति में प्रचलित जन संस्कारों, यहाँ के मानवीय संस्कृति के आचार-विचारों, मूल्यों मान्यताओं, तीज त्यौहारों के विशेष आयोजनों सहित बुन्देली लोक की आध्यात्मिकता को भी दर्शाते

*हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 8120071137